प्रतिबिंब

आईएचएम हाजीपुर की वार्षिक ई-पत्रिका

होटल प्रबंधन संस्थान खानपान प्रौद्योगिकी और अनुप्रयुक्त पोषण, हाजीपुर

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्सासी निकाय)

Institute of Hotel Management Catering Technology and Applied Nutrition Hajipur

(An Autonomous Body under Ministry of Tourism, Govt. of India)

सितम्बर 2024 - (इशू-२)

संस्थान के कार्यक्रमों में हमारे साथ सहभागी बने और हमारे उभरते होटल व्यवसायियों के क्षेत्र के बिद्यार्थियों और द्वारा कर्मचारियों द्वारा तैयार किये गए आलेख का आनंद ले.

विषय-सूची

पाठ सामग्री	पृष्ठ संख्या
1.1 "प्राचार्य के कलम से"	3
2.1 "राजभाषा के नियमों का अनुपालनएवं उसके अनुरूप किये जा रहे कार्य!	4
(क) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक	4
(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक	5
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठक	5
(घ) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चतुर्थ बैठक	5
3.1 "राजभाषा संबंधी प्रावधान"	9
4.1 "प्रतिबिम्ब"	11
5.1 "सफलता के मंत्र"	12
5.2 "मेरे छात्र"	14
6.1 "जीवन–निर्झर"	15
7.1 "मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक आदर्श व्यक्तित्व"	17
8.1 "हिन्दी भाषा"	21
9.1 "पराजय"	23

➢ मार्गदर्शक

श्री पुलक मंडल

➢ संरक्षक

श्री संदीपन सांत्क्रियाय्न

श्री मुर्तजा कमाल

➢ संपादक मंडल

श्री संदीपन सांत्क्रियाय्न

श्री मुर्तजा कमाल

श्रीमती प्रतिमा सिन्हा

➢ तकनीकी समर्थन

श्री मोहन कुमार

प्रिय पाठक,

संस्थान की ई–पत्रिका प्रतिबिंब द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिन्दी न केवल हमारी रजभाषा है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय पहचान के साथ साथ राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। हमें हिन्दी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करना एवं अपने कार्यालय के अन्य सहायोगियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना हमारा दायित्व भी है। हम सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मिलकर यह प्रयास करें कि हिन्दी न केवल पूरी तरह से हमारी राजभाष बने बल्कि विश्व भाषा भी बने।

पत्रिका के माध्यम से सभी सदस्य हिन्दी के प्रति अपने मन के विचार, अपने अंदर छुपी हुई साहित्यिक अभिरूचियों को व्यक्त कर सकते हैं। मैं आई एच एम हाजीपुर के अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि ई पत्रिका की यह अविरल धरा सतत प्रवाहित होती रहे।

शुभकामनाओं सहित!

पूलक मंडल
प्राचार्य

२.१ राजभाषा के नियमों का अनुपालनएवं उसके अनुरूप किये जा रहे कार्य!

होटल प्रबंध खान–पान प्रोद्यौगिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषाहार संस्थान हाजीपुर में राजभाषा के नियमों का अनुपालन अच्छी तरह से किया जा रहा है। प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन भी निर्धारित समय अवधि में किया जाता है।

द्वाराः–मुर्तजा कमाल
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधित प्रतिवेदन 2023–24

(क) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठकः

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक दिनांक 27.06.2023 को श्री पूलक मंडल (प्राचार्य) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संस्थान के फैकल्टी सहित अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। इस दौरान राजभाषा संबंधित विभिन्न धराओं एवं नियमों के अनूपालन पर विस्तृत चर्चा हुई। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 09.05.2023 को आई एच एम हाजीपुर के राजभाषा निरीक्षण के दौरान विभिन्न बिंदुओं पर की गई टिप्पणी और कमी को दूर करने लिए दिए गये निर्देशों के अनुपालन किये जाने पर भी निर्णय लिया गया।

धारा 3(3) के तहत आने वाले दस्तावेज़ों की सूचीः–

क. सं0	विवरण	Particulars	क. सं0	विवरण	Particulars
01	सामान्य आदेश	General Orders	09	अनुज्ञप्तियां	Licences
02	संकल्प	Resolution	10	निविदा प्रारूप	Tender Forms
03	परिपत्र	Circulars	11	अनुज्ञा पत्र	Permits
04	नियम	Rules	12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
05	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administration or other reports	13	अधिसूचनाएं	Notifications
06	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release / Communiques	14	संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ात	Reports and documents to be laid before the Parliament
07	संविदाएं	Contracts			
08	करार	Agreements			

क्षेत्रावार वर्गीकरण ('क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र में हिन्दी):–

राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार हिन्दी बोले जाने एवं लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर संपूर्ण भारतवर्ष को तीन क्षेत्रों में बॉटा गया है।

'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
क क्षेत्र के अंतर्गत वे राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र आते हैं जहॉ की बोली ही हिन्दी है। राज्यः– बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश संघ राज्यः– अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली	राज्यः– गुजरात, महाराष्ट्र एवं पंजाब संघ राज्यः– चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली	ओड़िशा, बंगाल, असम, अरूणाचल प्रदेश, नागालेण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, केरल

(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठकः–

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक दिनांक 26.09.2023 को श्री पूलक मंडल (प्राचार्य) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संस्थान के फैकल्टी सहित अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। इस दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रगति के लिए किये गये अब तक के कार्य की विवेचना की गई। जिसमें कर्मचारियों ने बताया कि संस्थान के सभी कक्षाओं, विभागों, प्रयोगशालाओं, बैनर पोस्टर एवं साईन बोर्ड आदि को द्विभाषी रूप में मुद्रित की जा चुकी है। पत्राचार तथा टिप्पणी आदि पर राजभाषा के नियमानुसार अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है।

(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठकः–

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठक दिनांक 28.12.2023 को संपन्न हुई। बैठक में संस्थान के फैकल्टी सहित अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। इस दौरान राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजातों को द्विभाषी रूप में जारी करने की अनिवार्यता पर चर्चा की गई साथ ही 1976 के नियम 5 से भी संस्थान के कर्मचारियों को आवगत कराया गया की इस नियम अंतर्गत हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना अनिवार्य है।

(घ) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चतुर्थ बैठकः–

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठक दिनांक 09.01.2024 को श्री पूलक मंडल (प्राचार्य) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संस्थान के फैकल्टी सहित अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। इस दौरान प्राचार्य महोदय ने सभी सदस्यों को निर्देश दिए की कार्यालय के कार्यों में राजभाषा के नियमों का अनुपालन सुनिश्चित हो।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण

दिनांक 09.05.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा किया गया। मंत्रालय तथा संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में माननीय सदस्यों द्वारा राजभाषा हिंदी के कार्यों का अवलोकन किया गया। निरीक्षण के उपरांत संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के माननीय सदस्यों द्वारा आई एच एम हाजीपूर को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

दिनांक 14 सितंबर 2023 को संस्थान में ''हिन्दी दिवस'' तथा 14–28 सितंबर 2023 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिस दौरान विभिन्न प्रकार की क्वीज़, निबंध प्रतियोगिता तथा

प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन संस्थान के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच किया गया। विजेताओं को पुरूस्कार तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरण किया गया।

दैनिक भास्कर हाजीपुर 15-09-2023

आईएचएम में सदा समिति के निर्देश पर होगा 100 प्रतिशत हिन्दी में कार्य

सिटी रिपोर्टर| हाजीपुर

पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार के अधीन स्वायत्तशासी निकाय होटल प्रबंधन संस्थान, हाजीपुर में 'हिन्दी दिवस' पखवारा का आगाज किया गया। हिंदी दिवस पर आयोजित पखवाड़ा 28 सितम्बर 20023 मनाया जाएगा। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के प्राचार्य पूलक मंडल, समित चटर्जी, कल्याण मुखर्जी, मुर्तजा कमाल ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य पूलक मंडल ने कहा भारतीय संविधान के 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्थान दिया गया है।

हिंदी दिवस पखवारा पर कार्यक्रम में शामिल संस्थान के व्याख्याता

पिछले कुछ दिनों में सिविल सेवा में हिंदी भाषी छात्रों का प्रदर्शन अच्छा रहा है। वहीं मुर्तजा कमाल ने कहा कि हिंदी को राज्य भाषा का स्थान दिया गया है। हमें हिंदी बोलने और इसका प्रयोग करने में गौरवान्वित होना चाहिए। हिंदी एक सरल भाषा है। उन्होंने संस्थान के विगत माह की राजभाषा हिंदी की कार्य रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि संस्थान में हम सभी मिलकर 90 प्रतिशत कार्य हिन्दी में कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं की जब सदा समिति के निदेश के बाद 100 प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाएगा। वह दिन अब दूर नहीं जब संसदी राजभाषा समिति के निर्देश पर संस्थान में सभी कार्य हिंदी में किये जाएँगें।

TAASIR Patna FRIDAY 15 SEPTEMBER 2023 9

ہوٹل مینجمنٹ انسٹی چیوٹ حاجی پور میں ہندی دیوس کا انعقاد

क्या करें :-

- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में दें।
- मूल पत्राचार शतप्रतिशत हिंदी में करें।
- 'क' एवं 'ख' केलिए पास/पी टी ओ हिंदी में जारी करें।
- 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/राज्य सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार हिंदी में करें।
- फाइलों में टिप्पणियाँ हिंदी में दें।
- दौरा कार्यक्रम, यात्रा भता बिल और अवकाश के आवेदन सब आदि हिंदी में प्रस्तुत करें।
- अतिरिक्त किराया टिकट, रसीदें, पार्सल खान्ने, मनी रसीदें अमानती सामान पर रसीदें आदि हिंदी में ही तैयार करें।
- सेवा पंजियों और रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिंदी में करें।
- बैठक की कार्यसूची/कार्यवृत्त हिंदी में जारी करें।
- अनुशासनात्मक मामलों की कारवाई हिंदी में करें।
- विभागीय परीक्षाओं के प्रश्न पत्र द्विभाषी रूप में जारी करें जिसमें हिंदी संबंधी प्रश्न दें तथा प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प रखें।
- रबर की मोहरें द्विभाषी रूप में बनवाकर उपयोग करें।
- प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण हिंदी माध्यम से दें।
- कंप्यूटर पर मानक हिंदी फॉण्ट का उपलब्ध होना सुनिश्चित करें।
- पर्सनल कंप्यूटर पर रोजमर्रा के काम में आनेवाले फॉर्म, पत्रों के नमूने हिंदी में फीड़ कर प्रयोग में लाएं।

क्या न करें :-

- केवल अंग्रेज़ी में मानक और स्थानीय फार्म का प्रयोग न करें।
- कोई भी रबर के मोहर, धातू की सीले, नाम सूचना पट्ट, नाम पदनाम, बैज केवल अंग्रेज़ी में न बनवाएं।
- आरक्षण चार्ट केवल अंग्रेज़ी में न करें।
- 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालयों को फैक्स सन्देश अंग्रेज़ी में न भेजें।
- हिंदी में प्राप्त या हस्ताक्षरित पत्रों के उत्तर अंग्रेज़ी में न दें।
- 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के कार्यालयों को भेजे जाने वाले लिफाफों के पते अंग्रेज़ी में न लिखें।
- फाइल कवरों पर शीर्ष केवल अंग्रेज़ी में न लिखें।
- सतर्कता आदेश केवल अंग्रेज़ी में जारी न करें।
- धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले प्रलेखों को केवल अंग्रेज़ी में जारी न करें।
- विभागीय परीक्षाओं के प्रश्न केवल अंग्रेज़ी में न दें।

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वय समिति की बैठक के साथ साथ अधिकारियों तथा कर्मचारियों के राजभाषा संबंधित जानकारी में वृध्दि के लिए प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का भी आयोजन किया जाता है।

मुर्तजा कमाल
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

3.1 "राजभाषा संबंधी प्रावधान"

भारत सरकार ने विभिन्न प्रावधानों को तैयार कर हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया जो निम्नलिखित है:-

१. ऐसा कार्यालय जिसमे ८० प्रतिशत से अधिक् कर्मचारियों ने हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है उस कार्यालय को भारत सरकार के गजट में अधिसूचित करने की कार्यवाई की जाती है | (राजभाषा नियम१०(४))

२. हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त/प्रवीणता प्राप्त कर्मचारी से यह आशा की जाती है की वह कार्यालय के कार्यो को हिन्दी में करें | इसके लिए कार्यालय प्रधान के द्वारा ऐसे कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने के लिए अधिकृत किया जाता है और कार्यालय आदेश जारी किया जाता है | (राजभाषा नियम ८(४))

३. यदि किसी कर्मचारी / अधिकारी को हिन्दी भाषा का ज्ञान नहीं है तो उसे हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा | यह प्रशिक्षण केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा बिभाग, गृह मंत्रालय, २ए पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली में होगा | इसके द्वारा हिन्दी के तीन कोर्स का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है.

प्रबोध

प्रवीण

प्राज्ञ

इन प्रशिक्षणो की समाप्ती पर आयोजित परीक्षा में प्राप्त अंको के आधार पर सम्बंधित बिभाग के द्वारा नकद पुरस्कार एंव एक वर्ष के लिए एक वैयक्तिक वेतन बृद्धि प्रदान की जाती है | इन सभी कक्षाओं (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ) की पढाई पत्राचार माध्यम से भी होती है जिसकी प्रक्रिया लगभग ०९-१० माह की होती है | पत्राचार माध्यम से अध्ययन करने वाले कर्मचारियों को अलग से वैयक्तिक पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है |

४. राजभाषा नियम की धरा ३(३) के तहत निम्नलिखित प्रकार के दस्तावेजो को दोनों भाषाओं में (अर्थात हिन्दी और अंग्रेजी में) जारी किया जाना चाहिए |

१. साधारण आदेश	८. करार
२. नियम	९. अनुज्ञप्तिया
३. अधिसूचना	१०. प्रतिवेदन/ रिपोर्ट
४. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन/रिपोर्ट	११. प्रेस प्रतिवेदन
५. प्रेस विज्ञप्ति	१२. सूचना
६. संसद के समक्ष रखे गए प्रशासनिक प्रतिवेदन	१३. निविदा
७. संविदा	१४. संकल्प

५. राजभाषा नियम १९७६ के तहत देश को पत्राचार के लिए तीन क्षेत्रों में बांटा गया है |

'क' – क्षेत्र – बिहार, हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, उतराखंड, राजस्थान, उतर प्रदेश, अणडमान निकोबार द्वीप समुह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली |

'ख' – क्षेत्र – गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दमन दीव और दादर नगर हवेली

'ग' – क्षेत्र – 'क' और 'ख' क्षेत्र को छोड़कर शेष सभी राज्य

६. राजभाषा नियमो के अनुपालन के लिए कार्यालय प्रधान द्वारा जाँच बिन्दुओं का बनाया जाना आवश्यक है ताकि सभी अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा नियमो का अनुपालन कर सके |

नरेश कुमार
प्रशासनिक अधिकारी

४.१ "प्रतिबिम्ब"

बचपन में सुनता था–आपका जीवन आपके विचारों का प्रतिबिम्ब है। परछाई के पीछे मत भागो तुम उसे कभी पकड़ नहीं पाओगे। पैसा और परछाई दोनों के पीछे आप जितना भागेंगे वो आपसे उतना ही दूर होता चला जाएगा।

प्रतिबिम्ब आपकी छाया है और आप अपना मुल्यांकन उसमें कर सकते हैं। दूसरे भाब्दों में यह आपकी फोटो कॉपी और यथार्थ है जिसे आप झूठला नहीं सकते हैं।
हर अभिभावक यही चाहते है कि उनका बच्चा उनका प्रतिबिम्ब हो और यह सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं कि आपका बच्चा बिल्कुल आपकी तरह है।

दुसरे दृष्टिकोण से देखें तो आप प्रतिबिम्ब में अपनी छाया के गुणों एवं दोषों का मूल्यांकन कर सुधार कर अपने यथार्थ को बदल सकते हैं। अगर आप अपने आपको और अपने दृश्टिकोण को बदलें तो आपका प्रतिबिम्ब भी बदल सकता है। किसी शायर ने खूब कहा है–
"तस्वीरें लेना भी जरूरी है जिंदगी में साहब,
आईने गुजरते वक्त नहीं बताया करते" ।

अमित कुमार
वरीय व्याख्याता

"सफलता के मंत्र"

कार्य सफल तभी होते हैं जब उनकी शुरूआत से अंत तक हर चरण पर ईमानदारी से काम किया जाए। गलतियां करना गलत नहीं हैं, बार–बार एक ही तरह की गलतियां करते रह जाना जरूर गलत है। यह समझना जरूरी है कि हमारी गलती क्या है और वह क्यों हो रही है? अक्सर हम हल ढूंढने के बजाए खुद को कोसते रहते हैं।

कवि रामवृक्ष बेनीपुरी अपनी कविता नींव के ईंट में कहते हैं।–

वह जो चमकीली सुंदर सुघड़ इमारत आप देख रहे हैं,

वह किस पर टिकी है?

इसके शिखर को आप देखा करते हैं

क्या आपने कभी इसकी नींव की ओर ध्यान दिया है?

हमारे चुनाव हमारे विचार और हमारी प्रतिक्रियाएं इस बात पर निर्भर करती है कि हम कितना जानते हैं। दिक्कत कम जानने से भी उतनी नहीं है जितना उस कम को सब कुछ मान लेने से होता है। नतीजा हम वहां तक नहीं पहुंच पाते जहां पहुंच सकते थे।

मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं–

पुराने समय की बात है किसी नगर में राम और श्याम नामक दो धनी व्यापारी रहते थें। वे दोनों ही अपने धन और वैभव का बड़ा प्रदर्शन किया करते थें। एक दिन राम अपने मित्र भयाम के घर उससे भेंट करने के लिए गया। राम ने देखा कि भयाम का घर बहुत विशाल और तीन मंजिला था। उस समय तीन मंजिला घर होना बड़ी बात थी और उसे बनाने के लिए बहुत धन और कुशल वास्तुकार की आवश्यकता होती थी। राम ने यह भी देखा कि नगर में सभी निवासी भयाम के घर को बड़े विस्मय से देखते थें और उसकी बहुत बड़ाई करते थे।

अपने घर वापस पहुंचने पर राम बहुत उदास था कि श्याम के घर ने सभी का ध्यान खींच लिया था। उसने उसी वास्तुकार को बुलवाया जिसने भयाम का घर बनाया था। उसने वास्तुकार से भयाम के घर जैसा ही तीन मंजिला घर बनाने को कहा। वास्तुकार ने इस काम के लिए हामी भर दी और काम शुरू हो गया। कुछ दिनों के बाद राम काम का मुआयना करने के लिए निर्माण स्थल पर गया। जब उसने नींव खोदे जाने के लिए मजदूरों को गहरा गड्ढ़ा खोदते देखा तो वास्तुकार को बुलाया और पूछा कि इतना गहरा गड्ढ़ा क्यों खोदा जा रहा है? "मैं आपके बताए

अनुसार तीन मंजिला घर बनाने के लिए काम कर रहा हूं " वास्तुकार ने कहा। सबसे पहले मैं मजबूत नींव बनाऊँगा फिर क्रमशः पहली मंजिल दूसरी मंजिल और तीसरी मंजिल बनाऊँगा।

राम ने कहा, "मुझे इन सब बातों से कोई मतलब नहीं है। तुम सीधे ही तीसरी मंजिल बनाओ और उतनी हीं ऊंची बनाओ जितनी ऊंची तुमने श्याम के लिए बनाई थी। नींव की और बाकी मंजिलों की परवाह मत करो"।

"ऐसा तो हो नही सकता", वास्तुकार ने कहा। "ठीक है, यदि तुम नहीं करोगे तो मैं किसी और से करवा लूंगा"-राम ने नाराज होकर कहा। उसे नगर में ऐसा कोई वास्तुकार न मिला जो नींव के बिना घर बना सकता था। फलतः वह घर कभी न बन पाया।

इसलिए मेरे छात्रों अपनी नींव को मजबूत करें। जीवन में बहुत कुछ बेहतरीन होना बाकी है। कई खूबसूरत लम्हें रास्ते में हमारी प्रतिक्षा में है हमारी कई उम्मीदों को अभी उड़ान भरनी है कई हैरतों से मुलाकात होनी हैं। कई सुख बाहें फैलाए खड़ें हैं।

धन्यवाद!

अनुपम कुमार
वरीय व्याख्याता

५.२ "मेरे छात्र"

मेरे छात्र तू महान बन,
राम सा चरित्रवान बन,
कृष्ण सा गुणवान बन,
बुद्ध–सा शील बन,
मेरे छात्र तू महान बन।

शिष्य बन अर्जुन सा,
मित्र बन हनुमान सा,
ज्ञानी बन आर्यभट्ट सा,
सदाचारी बन हरीशचंद्र सा,
मेरे छात्र तू महान बन।

हिमालय सा अडिग बन,
चट्टान सा अटल बन,
आम सा फलदार बन,
बट सा छायादर बन,
मेरे छात्र तू महान बन।

जटायु सा कर्मयोगी बन,
गणेश सा सपुत बन,
शिवाजी सा वीर बन,
महाराणा सा स्वाभिमानी बन,
मेरे छात्र तू महान बन।

मेरे तम का तेज अंश बन,
पिता के सर का ताज बन,
बहन के धागे का अभिमान बन,
वंश का उजियारा सूर्य बन,
मेरे छात्र तू महान बन।

शिष्टाचार का उदाहरण बन
ज्ञानी बन विज्ञानी बन
मनुष्य में परमार्थी बन
सच्चा अभ्यार्थी बन
भरत सा प्रतापी बन
मेरे छात्र तू महान बन

अनुपम कुमार
वरीय व्याख्याता

६.१ "जीवन–निर्झर"

स्वच्छ–निर्झर सा ये जीवन,
कल–कल बहता इसका पानी,
सुख–दुख को लेकर साथ चले,
मस्ती से राहों को पार करें।

साँसें तो एक दिन जानी है,
पर चिंताऐं करना बेमानी है,
जो मिल रहा उसका रसपान करो
उस ईश्वर का गुणगान करो।

जीवन है तो बाधाऐं आएंगी ही
तुमको रोकेगी, रूलाएँगी हीं,
किन्तु ठहर न जाना तुम इस पार,
दृढ़ निश्चय कर जाना उस पार।

हम सबकी यही कहानी है,
जीवन तो बहता पानी है।

श्रीमति प्रतिमा सिन्हा
पुस्तकालयाध्यक्ष

"बसंत के चपल चरण"

आना बसंत आना,
तुम बार–बार आना,
नवगीत लिए आना,
नवप्रीत लिए आना।

मदमस्त हवाएं लाना,
जन–जन में प्राण लाना,
आना बसंत आना,
तुम बार–बार आना।

सरसों के फूलों में तुम,
गाँवों के झूलों में तुम,
नवयौवन के श्रृंगारों में तुम,
छात्रों के हृदय में तुम,
एक नई ऊर्जा जगाना।

आना बसंत आना,
तुम बार–बार आना।

वसंत एक वेग है,
वसंत एक गान है,
पुकारती इसे धरा,
पुकारता गगन है,
तुम सबमें आनंद जगाना।

आना वसंत आना,
तुम बार–बार आना।

कोयल ने कुक तानी,
भंवरों ने राग छेड़ा,
कमलों ने मुखड़ा खोला,
अलसी ने कलश झुलाया,
तुम अपने चपल चरण से,
इस धरा को प्राण देना।

आना वसंत आना,
तुम बार–बार आना।

प्रतिमा सिन्हा
पुस्तकालयाध्यक्ष

७.१ "मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक आदर्श व्यक्तित्व"

रामचरितमानस आर्यसंस्कृति का प्रकाशस्तम्भ है। महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन–दर्शन का जीवन्त स्वरूप का प्रकाश होता है। आखिर ऐसा क्या था जो श्री राम के व्यक्तित्व को एक अवतारी पुरुष के रूप में प्रतिष्ठापित करता है। यह एक अतिगंभीर विषय है। श्री राम को हमारे पौराणिक ग्रन्थों में अनन्त विभूषित व्यक्तित्व का स्वामी बताया गया है। चराचर जगत के स्वामी, रचयिता, भगवान श्रीहरि और पव्रह्म परमेश्वर के अवतार की संज्ञा प्रदान की गयी है। सच तो यह है कि मर्यादा पुरुषोत्तम के व्यक्तित्व का वर्णन साधारण मानव के अधिकार क्षेत्र से परे है। कबीर के शब्दों में यदि कहा जाए तो – "सात समुंद की मसि करूँ लेखनि सब बनराय। धरती सब कागद करौं, हरि गुण लिखा न जाए।"

रामभक्ति की मुख्य अवधारणा वैदिकधर्म के जटिल कर्मकाण्ड के परिणामस्वरूप भगवान के भक्ति का आश्रय पाकर विकसित हुआ। इसमें अवतारवाद की परिकल्पना के प्रवेश के कारण श्री राम के अवतारभाव का प्रादुर्भाव हुआ। यह भावना भगवतधर्म से उद्भूत हुई। वैष्णवधर्म का आदिस्वरूप भगवान् विष्णु के देवत्व से परिकल्पित है। ऋगवेद में विष्णु को प्रथम श्रेणी के देवताओं की श्रेणी में माना गया है। ईसा के पाँचवीं सदी के पूर्व ही विष्णु के राम एवं कृष्ण रूप के अवतार की चर्चा प्रकाश में आयी । यों तो वैदिक साहित्य में भी राम–भावना का स्वरूप वर्णित है, पर उनके अवतारी रूप की चर्चा नहीं मिलती। वाल्मीकिय रामायण में भी राम को अवतार न स्वीकार कर महापुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम स्वीकार किया गया है। यह रामायण ग्यारहवीं शताब्दी ईसा–पूर्व की रचना है। महाभारत की अणुगीता में राम को पौराणिक महापुरुष स्वीकार किया गया है। योगवाशिष्ठ में राम के योगी स्वरूप का वर्णन मिलता है। मानवधर्मशास्त्र एवं विष्णुपुराण में राम को अवतार के रूप में स्वीकार किया गया है। उत्तररामतापनीयोपनिषद् में आदर्श मर्यादापुरुषोत्तम राम की चर्चा है। रामार्चनपद्धति में राम के देवतास्वरूप का वर्णन मिलता है। अध्यात्मरामायण में राम भक्ति–भावना के स्वरूप का विकास दृष्टिगोचर होता है। श्री राम के सम्पूर्ण वांड्मय का दर्शन तुलसीकृत रामचरितमानस में मिलता है। रामचरितमानस न केवल श्रीराम के जीवन और उनके चरित्र का वर्णन है बल्कि सम्पूर्ण साहित्य भक्ति भावना से परिपूर्ण है जो राम के व्यक्तित्व को देवत्व प्रदान करने में पूर्णरूपेण सक्षम है।

रामचरितमानस में श्री राम को एक आदर्श मर्यादा पुरूषोत्तम विष्णु के अवतार के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है। मुख्यतः रामचरितमानस के कथानक का विभाजन बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड में किया गया है। इसके कथानक का मूल प्रतिपाद्य है रावण का वध और राम का राज्याभिषेक। राम आदर्श चरित्र एवं सद्वर्ग के पात्र हैं एवं रावण असद्वर्ग का।

बालकाण्ड में राम के जन्म, गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने, महर्षि विश्वामित्र के प्रयास से ताड़का नामक राक्षसी का संहार, विविध शस्त्रों के संधान की शिक्षा एवं सीता–राम के पावन परिणय की कथा का वर्णन है। जहाँ राम के जन्म के समय ही माता कौशल्या के द्वारा यह प्रार्थना किया गया है–'' भए प्रकट कृपाला, दीनदयाला कौशल्या हितकारी हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप विहारी.....शोभा सिन्धु खरारी। कहदुई कर जोरी स्तुती कोरी केहि विधि करूउँ अनन्ता .....उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना.....माता पुनि बोली... किजै शिशु लीला अतिप्रियशीला भक्त जनन हितकारी। सुनी वचन सुजाना रोदनठाना होई बालक सुरभूपा।'' यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्रीराम का जन्म नहीं होता है बल्कि वे प्रकट होते है चतुर्भुज विष्णु के रूप में। माता कौशल्या प्रार्थना करती हैं कि इस रूप में कौन आपको मेरा पुत्र कहेगा। आप बालक के रूप में आईये। माता के अनुरोध पर श्रीहरि विष्णु बालक का रूप धारण कर रोदन करने लगे।

उनके दूसरे रूप में ब्रह्मचारी राम के शिक्षार्थी रूप का वर्णन मिलता है – ''गुरु गृह गएउ पढ़न रघुराई अल्पकाल विद्या सब पाई।'' यह चौपाई उनके विलक्षण प्रतिभा का उदाहरण है। वहीं विद्या प्राप्ति के उपरान्त अपने अनुज लक्षमण के साथ महर्षि विश्वामित्र के अनुरोध पर उनके यज्ञ स्थल पर जाकर अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा प्राप्त करना एवं ताड़का नामक राक्षसी का संहार करना। यह राम जैसे सक्षम देव गुण सम्पन्न व्यक्ति से ही संभव है। वहीं जनकपुर जाने के कम में अहिल्या का उद्धार, भगवान शिव के धनुष का खण्डन कर जगत जननी सीता के साथ पावन–परिणय के उपरान्त अयोध्या वापसी। अद्भुत एवं विस्मयकारी लीलायें श्रीराम जैसे व्यक्तित्व की ही देन हो सकती है।

अयोध्याकाण्ड में राजा दशरथ के द्वारा श्रीराम को राजगद्दी देने का विचार करना, मंथरा की कुटिलता से माता कैकयी द्वारा भरत को राजगद्दी और श्रीराम को चौदह वर्ष के लिए मुनिवेश में वनगमन, निषाद राज की मित्रता, ऋषि–मुनियों के सहयोग से पंचवटी में कुटिया का निर्माण, श्रीराम के वियोग में दशरथ जी का प्राणत्याग, भरत का सपरिवार पंचवटी पधारना और चौदह वर्ष तक सन्यासी सा जीवन व्यतित करना, श्रीराम के चरणपादुका को सिंहासन पर रख कर राज–काज संचालित करना।

अरण्यकाण्ड में लक्षमण द्वारा सूर्पनखा का नाशिका विध्वंश करना, खर–दूषन नामक राक्षस का श्रीराम के द्वारा वध करना। मारीच नामक राक्षस के द्वारा स्वर्ण मृग का रूप धारण करना, श्रीराम के द्वारा मारीच का संहार करना, कुटिया छोड़ कर लक्षमण का जाना एवं रावण के द्वारा सीता का हरण करना एवं मानवोचित गुण से प्रेरित हो रुदन करते हुए सीता की खोज में वन–वन भटकना आदि शामिल है। यहाँ श्रीराम का चरित्र एक आज्ञाकारी पुत्र, लोभ–लालच से दूर भाई के लिए राजगद्दी का त्याग, एक पत्नीव्रता पति, सुयोग्य भाई, धीर–वीर कठिन परिस्थितियों से

जूझने की क्षमता, धैर्यवान व्यक्तित्व के स्वामी एवं अपने कुल की मर्यादा को कायम रखने के लिए कष्ट झेलने के लिए हँसते–हँसते तैयार हो जाना। यह कोई दैवीयगुण सम्पन्न व्यक्ति के द्वारा ही संभव है।

किष्किन्धाकाण्ड में सीता की खोज करते हुए घायल जटायु से मिलना एवं उसका अन्तिम संस्कार एक पुत्र की तरह करना और माता सबरी की कुटिया में जाकर जूठे बेर खाना तथा उनके द्वारा बताये गए मार्ग पर चलते हुए किष्किन्धा पहुँचना । महावली हनुमान एवं सुग्रीव से मित्रता एवं बाली का संहार । सुग्रीव का राजतिलक एवं सुग्रीव के सहयोग से सीता की खोज के लिए हनुमान, अंगद, जामवंत आदि को चारो दिशाओं में भेजना वर्णित है। यहाँ श्रीराम के दयालु एवं भक्तवत्सल प्रवृति की झलक मिलती है। गिद्ध जटायु को पिता की तरह सम्मान एवं दलित सबरी की भक्ति भावना को दृष्टिगत रखते हुए पूर्ण आतिथ्य को स्वीकार करना। मित्र के रूप में बाली का वध कर सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाना आदि ं।

सुन्दरकाण्ड मुख्यतः महाबली हनुमान जी की लीला का संवरण है। अंगद, जामवंत आदि वानरी सेना के साथ हनुमान जी सीता माता की खोज में दक्षिण की ओर समुद्रतट पर पहुँचते है। वहाँ जटायु के अग्रज गिद्धराज संपत से मुलाकात होती है। संपत अपनी गिद्धदृष्टि से निहारकर उन्हें सीताजी को श्रीलंका ले जाने की बात बताते हैं। तब महाबली हनुमान समुद्र लांघकर श्रीलंका पहुँचते हैं। समुद्र लांघने के क्रम में सुरसा की परीक्षा से गुजरने के बाद जल में रहनेवाली निशाचरी, लंका की रक्षिका द्वारपालिका राक्षसी आदि का संहार करना पड़ा। लंका में विभिषण से अशोक वाटिका में सीता जी के निवास की सूचना मिलती है तदुपरान्त माता सीता को श्रीराम की अँगूठी देकर अपना परिचय देते हैं और बहुविधि से माता जानकी को श्रीराम के चरित्र का गुणगान कर उन्हें शीध्र प्रभु के द्वारा मुक्त कराने की बात करते हैं। लंका में प्रभु श्रीराम की कृपा से अशोक वाटिका को उजाड़ कर रावण के पुत्र अक्षय कुमार को मार डालते हैं। मेघनाद के द्वारा पकड़े जाने पर रावण के दरबार में रावण को समझाने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु रावण के द्वारा इनके पूँछ में आग लगाने के फलस्वरूप लंका का दहन कर सीता माता से चूड़ामणि प्राप्त कर विदा ले वानरी सेना सहित श्रीराम के पास वापस आते हैं। यहाँ हनुमान जी के द्वारा यह बताया जाता है कि सीता माता की खोज के क्रम में की गई कार्रवाई में मेरा कोई योगदान नहीं है यह तो प्रभु श्रीराम के कृपा का फल है –''दासो अहम कौशलेन्द्रस्यः रामस्यः क्लीष्ट कर्मनः, हनुमान शत्रुसैन्यानाम निहनता मारुतात्मजः।''

तदुपरान्त श्रीराम अनुज लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, अंगद, जामवंत, नल–नील आदि वानर–भालू की सेना सहित लंका के लिए प्रस्थान करते हैं। समुद्र के किनारे पहुँचने पर रावण के अनुज विभिषण के शरणागत होने पर उसका राजतिलक करते हैं। समुद्र के सुझाव से नल–नील की

सहायता से श्रीराम सेतु का निर्माण कर रावण की नगरी लंका पहुँच कर सेना सहित समुद्र के किनारे डेरा डालते हैं।

लंकाकाण्ड में श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, जामवंत, अंगद, विभिषण आदि की सहायता से रावण के भाई कुम्भ कर्ण, पुत्र मेघनाद आदि सेनाओं सहित रावण का संहार कर लंका का राज विभिषण को सौंप कर माता सीता सहित अयाोध्या वापस होने का वर्णन है। इस युद्ध में श्रीराम के पूर्ण व्यक्तित्व और कीर्तित्व का दर्शन होता है। एक ऐसा व्यक्ति जो शत्रु को भी शरणागत होने पर गले से लगाते हैं और उनके अपराधों को क्षमा करते हैं। दूसरी ओर कम संसाधन में सैन्य संचालन करते हैं। महा मायावी राक्षसों के संहार करने के बाद उसके शव को उनके परिजन तक पहुँचाने की व्यवस्था करते हैं। लक्ष्मण को मेघनाद के द्वारा शक्तिवान लगने के बाद भी वे विचलित नहीं होते हैं। हनुमान जी के द्वारा हिमालय से सूर्योदय के पूर्व बूटी लाने पर लक्ष्मण के प्राण की रक्षा होती है। रावण के वध के बाद विभिषण द्वारा प्रदत्त पुष्पक विमान से सीता सहित अयोघ्या वापस होते हैं। तदुपरान्त अयोध्या का राज सिंहासन पर सीता सहित अपने भाईयों के साथ विराजते हैं।

उत्तरकाण्ड में राजाराम के द्वारा प्रजाजन के कहने पर सीता का परित्याग, सीता जी का वाल्मीकि आश्रम में निवास, श्रीराम के दोनों पुत्र लव–कुश का आश्रम में जन्म लेना, महर्षि वाल्मीकि के द्वारा दोनो बालकों की शिक्षा प्रदान करने तथा श्रीराम के द्वारा अश्वमेध यज्ञ करने के क्रम में दिग्विजययात्रा के लिए छोड़े गए घोड़े को लव–कुश के द्वारा पकड़ा जाना एवं भरत, लक्ष्मण, शत्रुध्न सहित श्रीराम की पूरी सेना को पराजित करना और अन्त में श्रीराम के युद्ध स्थल पर आगमन पर महर्षि वाल्मीकि द्वारा बालकों का परिचय कराना। अन्त में सीता जी सहित राजकुमारों का अयोध्या जाना एवं सीता माता का महाप्रयास के उपरान्त बालकों को राजगद्दी सौंप कर भाइयों सहित संसार का परित्याग करना शामिल है।

उपर्युक्त कथानक के आधारपर यह कहना सर्वथा उचित होगा कि भगवान श्री राम एक अप्रतिम विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के स्वामी थे। एक आदर्श पुत्र, अपने अनुजों के प्रति अपार स्नेह, एक कुशल राजा, एक कुशल प्रजापालक पिता, उच्च कोटि के साधक, वीर, गम्भीर प्रतिभासम्पन्न दैवीय गुणों से परिपूर्ण चमत्कारिक अवतारी पुरुष थे। उन आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम के चरणों में मेरा कोटिशः प्रणाम!

डॉ. जयन्ती प्रभा सिन्हा

डॉ. जयन्ती प्रभा सिन्हा
आशुलिपिक

८.१ "हिन्दी भाषा"

हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ–साथ हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है। वह दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हम आपको बता दें कि हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 में संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

हिन्दी का महत्व धीरे–धीरे हिन्दी भाषा का प्रचलन बढ़ा और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का रूप ले लिया। अब हमारी राष्ट्रभाषा, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसंद की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रूख कर रहे हैं। एक हिन्दुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा यानि हिन्दी बोलना और लिखना आना चाहिए, साथ ही साथ इसका सम्मान भी करना चाहिए।

हिन्दी भारत की भाषा है। राष्ट्रभाषा किसी भी देश की पहचान और गौरव होती है। हिन्दी पुरे भारत के निवासियों को बांधती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।

इसी कर्तव्य हेतु हम 14 सितम्बर के दिन को "हिन्दी दिवस" के रूप में मनाते हैं। साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल–समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नही होती। सालों पहले जब अंग्रेजी भाषा का भारत में चलन नही हुआ करता था, तब हिन्दी भारतवासियों और भारत से बाहर रह रहे हर वर्ग के लिए सम्माननीय होती थी। लेकिन बदलते युग के साथ अंग्रेजी ने भारत की जमीं पर अपने पांव गड़ा लिए हैं।

जिस वजह से आज हमारी राष्ट्रभाषा को हमें एक दिन के नाम से मनाना पड़ रहा है। पहले जहां स्कूलों में अंग्रेजी का माध्यम ज्यादा नही होता था, आज उनकी मांग बढ़ने से देश के बड़े–बड़े स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हिन्दी में पिछड़ रहे हैं। इतना ही नही, उन्हें ठीक से हिन्दी लिखना और बोलना भी नही आता है। भारत में रहकर हिन्दी को महत्व न देना भी हमारी बहुत बड़ी भूल है।

आजकल अंग्रेजी बाजार के चलते दुनियाभर में हिन्दी जानने और बोलने वाले को अनपढ़ या एक गंवार के रूप में देखा जाता है या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं। यह कतई सही नही है।

हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे है। और हम ही अपनी हिन्दी भाषा को वह मान–सम्मान नही दे पा रहें है, जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होना चाहिए। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या विजनेस क्लास लोगों के बीच खड़े होकर गर्व से अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है। इन्हीं कारणों से लोग हिन्दी बोलने से घबराते हैं।

राकेश कुमार
उच्च श्रेणी लिपिक

"पराजय"

कभी–कभी इस जीवन में,
हारना भी जरूरी है।
तुम कहाँ सही थे,
पर कहाँ कमी है,
ये जानना भी जरूरी है।
कभी–कभी इस जीवन में,
हारना भी जरूरी है।

यूं तो सीखा है बहुत कुछ,
हमने इन किताबों से,
इन सोच के सैलाबों से,
सवालों से जवाबों से।
पर कभी–कभी विफलताओं से,
सीखना भी जरूरी है।
कभी–कभी इस जीवन में
हारना भी जरूरी है।

–मुस्कान कुमारी–

एक राह चुनी इस दिल ने जब,
अपनी मंजिल तक जाने को।
पर खबर न थी इस बात की,
बेखबर, इस अंजाने को।
कि राह में इन अड़चनों का,
आना भी जरूरी है।
कभी–कभी इस जीवन में
हारना भी जरूरी है।

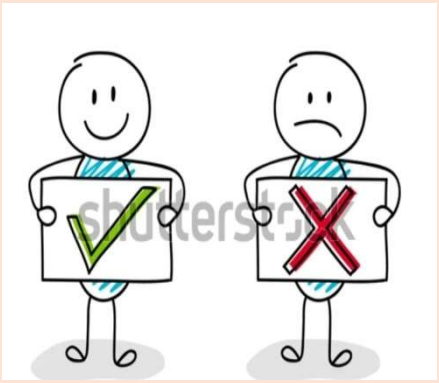

ये हार नहीं जो इस दिल को,
कमजोर बना देती है।
पहले से बेहतर बनने के,
अवसर दे जाती है।
इस सुयोग में पुनः खुद को,
तराशना भी जरूरी है।
कभी–कभी इस जीवन में
हारना भी जरूरी है।

–मुस्कान कुमारी–
अवर श्रेणी लिपिक (अनुबंध)

"विश्व पर्यावरण दिवस"

संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस पर छात्रों के बीच एनसीएचएमसीटी, नोएडा के द्वारा के #**Beat Plastic Pollution** के अंतर्गत प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया था।

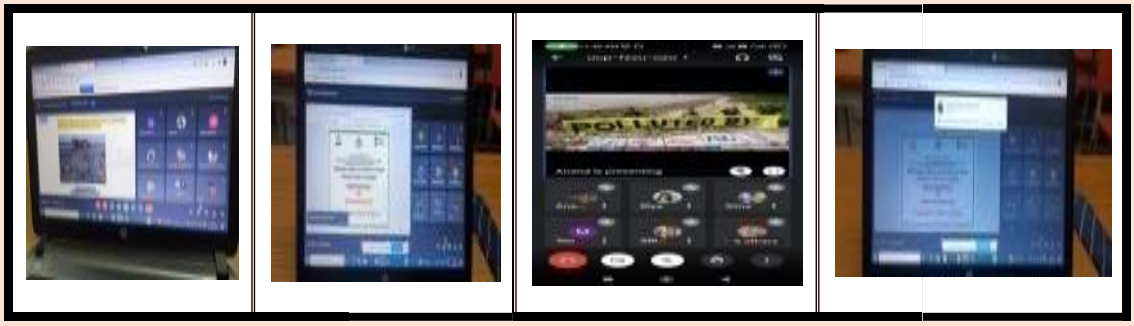

"अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस"

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सुश्री अर्चना कुमारी, योग प्रशिक्षक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा एक योग सत्र का संचालन किया गया। उन्होंने विभिन्न आसन और व्यायाम के प्रकार साझा किए जो मानव भारीर को मानसिक और शारीरिक रूप से फिट रखने में मदद कर सकते हैं।

"लाईफ बियॉन्ड एक्सपेक्टेशन"

लर्निंग फॉम एंट संस्था द्वारा "लाईफ बियॉन्ड एक्सपेक्टेशन, ड्रीम बियॉन्ड इमेजिनेशन" विषय पर ओरिएंटेशन सह प्रेरक कार्यशाला आयोजित किया गया ।

"हिंदी कार्यशाला का आयोजन"

हिन्दी और इसकी विरासत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें सभी शैक्षणिक और प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला में हिंदी शब्दावली एवं उपयोग सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई।

"विक्रम लैंडर"

संस्थान में दिनांक 23-08-2023 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के विक्रम लैंडर की चांद सतह पर सफल लैंडिंग को विद्यार्थियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से लाइव स्ट्रीमिंग को बड़े पर्दे पर प्रदर्शित किया गया था।

पटना नवबिहार टाइम्स औरंगाबाद, गुरुवार, 24 अगस्त 2023 2

होटल प्रबंधन संस्थान हाजीपुर में मना चंद्रयान-3 का जश्न

website : www.taasir.com

TAASIR Patna THURSDAY 24 AUGUST 2023

"फ्रेशर डे कार्यक्रम"

संस्थान में दिनांक 29-08-2023 को विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले नए विद्यार्थियों के लिए फ्रेशर डे कार्यकम का आयोजन किया गया जहां विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यकम और वेशभूषा का प्रदर्शन किया गया।

नवबिहार टाइम्स — औरंगाबाद, बुधवार 30 अगस्त 2023

केन्द्रीय होटल प्रबंधन संस्थान हाजीपुर में फ्रेशर वेलकम पार्टी का आयोजन

नवबिहार टाइम्स ब्यूरो

हाजीपुर। केन्द्रीय होटल प्रबंधन संस्थान हाजीपुर (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्तशासी निकाय) में तीन वर्षीय स्नातक प्रोग्राम में नामांकित विद्यार्थियों के लिए मंगलवार को फ्रेशर वेलकम पार्टी का आयोजन द्वितीय तथा तृतीय वर्ष के छात्रों के द्वारा किया गया। प्राचार्य पूलक मंडल तथा विभागाध्यक्ष सुमित चटर्जी ने फेशर वेलकम पार्टी का उद्घाटन संयुक्त रूप से किया। श्री मंडल ने बताया कि आई.एच.एम. हाजीपुर में मास्टर डिग्री, बैचलर डिग्री तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में नामांकित नए विद्यार्थियों के लिए फेशर पार्टी का आयोजन किया गया जिसका नाम [illegible]गाज रखा गया। विभिन्न प्रकार के देशी-विदेशी व्यंजनों को सीनियर छात्र-छात्राओं द्वारा संस्थान के फैकल्टी अनूपम कुमार, अमित कुमार, परमिंदर, अरिजित के मार्गदर्शन में तैयार किया गया और सर्विस के लिए फैकल्टी कल्याण, नीरज आदि ने विद्यार्थियों को दिशानिर्देश दिया। फेशर पार्टी के दौरान विभिन्न प्रकार रंगारंग कार्यक्रम, गिटार वादन, डांस ड्रामा, गायन तथा फैशन शो / रैंप वॉक का भी आयोजन किया गया। फैशन शो / रैंप वॉक में छात्र मुरारी त्रिपाठी एवं छात्रा सौम्या स्वप्निल को प्रथम स्थान के साथ-साथ मिस्टर एवं मिस कैम्पस का ताज पहनाया गया। सुमित चटर्जी, विभागाध्यक्ष ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन से छात्रों में उत्साह होता है और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों की सभ्यता तथा संस्कृति से अवगत होने का मौका मिलता है क्यूंकि आई एच एम हाजीपुर में देश के विभिन्न राज्यों से छात्र पढ़ने आते हैं। मुर्तजा कमाल (स. प्रशासनिक अधिकारी) ने मीडिया को बताया कि शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों को इस तरह के कार्यक्रम की जिम्मेदारी देने से उन्हें आतिथ्य प्रबंधन की जानकारी मिलती है जो उनके कैरियर में लाभकारी सिद्ध होगा। इस दौरान फैकल्टी कल्याण, संदीपन, राकेश, आनंद, सत्या, अंकित आदि के मार्गदर्शन में छात्रों ने कार्यक्रम परिसर को बहुत अच्छे प्रकार से डेकोरेट सहित विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता की व्यवस्था की थी। कार्यक्रम में प्रवीण, अरुण केपी, मोहन, सईद, नरेश आदि के अलावा संस्थान के छात्र [illegible]

PINDAR-30-08-2...

انسٹی ٹیوٹ آف ہوٹل منیجمنٹ میں فریشر پارٹی کا انعقاد

پٹنہ،29 اگست (پی این ایس): سینٹرل ہوٹل منیجمنٹ انسٹی ٹیوٹ حاجی پور میں 3 سالہ گریجویشن پروگرام میں داخلہ لینے والے طلبہ کے لئے منگل کو فریشر ویکل پارٹی کا انعقاد زیر تعلیم دوسرے اور تیسرے سال کے طلبا نے کیا۔ پرنسپل پولک منڈل اور صدر شعبہ سمت چٹرجی نے فریشر پارٹی کا مشترکہ طور پر افتتاح کیا۔ منڈل نے بتایا کہ آئی ایچ ایم حاجی پور میں ماسٹر ڈگری، بیچلر ڈگری اور ڈپلومہ کورس کے سال اول میں داخلہ لینے والے طلبا کے لئے فریشر پارٹی کا انعقاد کیا گیا۔ جس کا نام آغاز رکھا گیا تھا۔ مختلف طرح کے ملک اور بیرون ملک کے پکوان کو سینئر طلبا و طالبات نے ادارہ کے فیکلٹی انوپم کمار، امت کمار، پرمندر، ارجیت کی رہنمائی میں تیار کیا گیا۔ صدر شعبہ سمت چٹرجی نے بتایا کہ اس طرح کے پروگرام کے انعقاد سے طلبا کی حوصلہ افزائی ہوتی ہے اور انہیں مختلف علاقوں کی تہذیب اور ثقافت سے روبرو ہونے کا موقع ملتا ہے۔ فریشر پارٹی کے درمیان مختلف طرح کے رنگا رنگ پروگرام بھی پیش کئے گئے۔ فیشن شو/ ریمپ واک میں مراری ترپاٹھی اور سومیا سوپنل کو پہلا مقام کے ساتھ مسٹر اور مس کیمپس کا تاج پہنایا گیا۔ ایڈمنسٹریشن افسر مرتضیٰ کمال نے بتایا کہ تعلیمی ادارے میں طلبا کو اس طرح کے پروگرام کی ذمہ داری دینے سے انہیں گیسٹ منیجمنٹ کی جانکاری ملتی ہے جو ان کے کیریئر میں فائدہ مند ثابت ہوگا۔

"हिन्दी दिवस"

दिनांक 14-09-2023 को संस्थान के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित सदस्यों के द्वारा हिन्दी विषय एवं इसकी विभिन्नता पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त दिनांक 14-09-2023 से दिनांक 28-09-2023 तक संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिता एवं क्रियाकलाप शामिल थें।

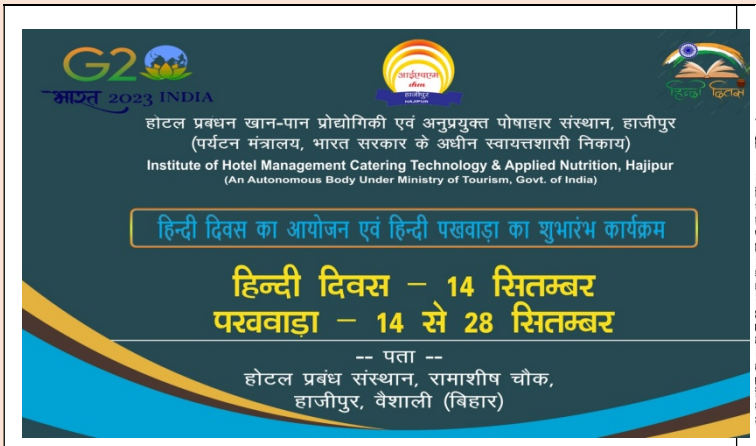

दैनिक भास्कर हाजीपुर 15-09-2

आईएचएम में सदा समिति के निर्दे
पर होगा 100 प्रतिशत हिन्दी में क

"फुड फेस्टिवल"

दिनांक 26-09-2023 को संस्थान में विद्यार्थियों द्वारा राजस्थान एवं असम थीम पर आधारित फुड फेस्टिवल का आयोजन किया गया जिसमें थीम आधारित विभिन्न व्यंजन एवं सांस्कृतिक कार्यकमों की प्रस्तुति की गई। छात्राओं ने राजस्थान एवं असम की स्थानीय वेषभूषा और लोक गीतों पर नृत्य प्रदर्शन के साथ क्षेत्र की स्थानीय परंपरा और संस्कृति को प्रस्तुत किया।

"तीन दिवसीय एनआरईटीपी इंक्युबेटर प्रोग्राम"

दिनांक 11-09-2023 से दिनांक 13-09-2023 तक संस्थान में रेस्त्रां, बेकरी एवं न्यूट्रिशन थीम आधारित तीन दिवसीय एनआरईटीपी इंक्युबेटर प्रोग्राम पर डोमेन ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षुओं को थीम संबंधित कौशल एवं अनुभवों के बारे में सिखाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सशक्त करना था।

"टुरिज्म एवं ग्रीन इंवेस्टमेंट थीम"

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर दिनांक 27-09-2023 "टुरिज्म एवं ग्रीन इंवेस्टमेंट थीम" पर आधारित कार्यकम विद्यार्थियों के लिए आयोजन किया गया।

"स्वच्छता ही सेवा एवं स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित विभिन्न कार्यकम"

दिनांक 15.09.2023 प्रथम दिन

- सेमिनार का आयोजन 'स्वच्छता ही सेवा' विषय पर किया गया, जिसके अंतर्गत 60 छात्रों ने भाग लिया। सेमिनार के दौरान विद्यार्थियों को बताया गया कि वे स्वच्छ भारत मिशन में हितधारक कैसे बन सकते हैं।
- सेमिनार में स्वच्छ भारत मिशन के बारे में विस्तार से बताया गया। इसका भारत के वर्तमान और भविष्य में प्रभाव के बारे में चर्चा की गई।

दिनांक16.09.2023 द्वितीय दिन

'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम के अंतर्गत परिसर सफाई अभियान का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के विधार्थियों ने भाग लिया।

दिनांक 18.09.2023 तृतीय दिन

"स्वच्छता ही सेवा" कार्यक्रम के अंतर्गत वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 15 छात्रों ने भाग लिया था।

दिनांक 19.09.2023 चतुर्थ दिन

स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत स्वच्छ भारत पर निबंध लेखन का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 200 छात्रों ने भाग लिया।

दिनांक 20.09.2023 पाँचवें दिन

'स्वच्छता ही सेवा' विषय पर पोस्टर मेकिंग और प्रस्तुतिकरण किया गया, जिसके अंतर्गत 12 छात्रों ने भाग लिया।

दिनांक 21.09.2023 छठे दिन

संस्थान परिसर में 'स्वच्छता ही सेवा'कार्यकम के अंतर्गत जागरूकता परेड का आयोजन किया गया जिसमें 30 छात्रों ने भाग लिया।

"वन्य जीवन की रक्षा"

दिनांक 19-10-2023 आईएचएम हाजीपुर के परिसर में 'वन और वन्य जीवन की रक्षा' विषय पर वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया।

"हेल्थ टॉक और सीपीआर प्रशिक्षण"

दिनांक 03-11-2023 जय प्रभा मेदांता सुपर स्पेशियालिटी हॉस्पिटल (पटना) के विशेषज्ञ डॉक्टर द्वारा आईएचएम, हाजीपुर में हेल्थ टॉक और सीपीआर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस तरह के कार्यकम छात्रों को भविष्य में जिस भी क्षेत्र में काम करेंगें, उदाहरण–कार्यकम योजना, ट्रैवल एजेंसी, पर्यटन, होटल, रेस्तरां और बार क्षेत्र आदि में आपातकालीन जीवन–घातक चिकित्सा स्थितियों को सफलतापूर्वक संभालने के लिए सशक्त बनाते हैं।

"स्वच्छता अभियान"

दिनांक 21-12-2023- आईएचएम हाजीपुर में छात्रों और कर्मचारियों के बीच स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। यात्रा स्थलों सहित एकल उपयोग प्लास्टिक के उन्मूलन के संबंध में भी जानकारी दी गई।

Photographs at the time of cleaning

Photographs after cleaning

"परीक्षा पर चर्चा"

29-01-2024 भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत में 10वीं एवं 12वीं की अंतिम परीक्षा के विद्यार्थियो के लिए परीक्षा पर चर्चा का सत्र लिया। इस सत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों का परीक्षा के दौरान मनोबल बढ़ाना और परिणाम की चिंता न करते हुए बेहतर प्रदर्शन करने पर जोर देना था। संस्थान के सभी पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए सभागार में सत्र का लाइव प्रदर्शन किया गया एवं सभी विद्यार्थियों ने इस सत्र में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की।

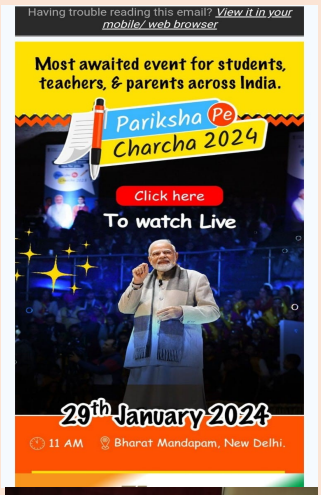

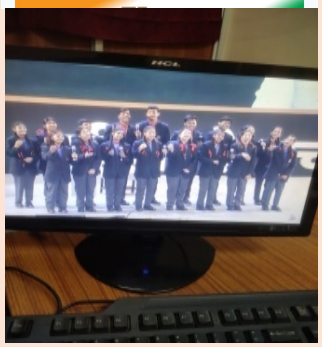

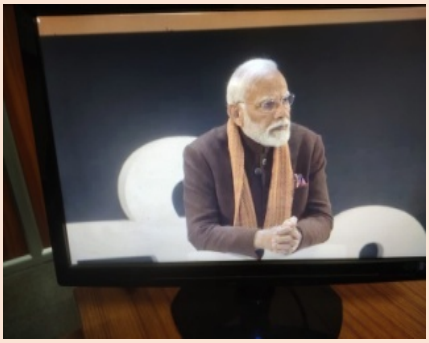

"ट्रैवल फॉर लाइफ"

दिनांक 19-01-2024 आईएचएम हाजीपुर ने छात्रों के बीच ऊर्जा बचत के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए "ट्रैवल फॉर लाइफ" के अंतर्गत 'ऊर्जा बचाएं' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

RANGOLI COMPETITION
TOPIC SAVE ENERGY
VENUE IHM HAJIPUR
DATE 19 JAN 2024
REWARDS WILL BE GIVEN FOR 1ST 2ND & 3RD POSITION
@THEYATRIKAOFFICIAL

SAVE EARTH

SAVE ENERGY
SAVE EARTH

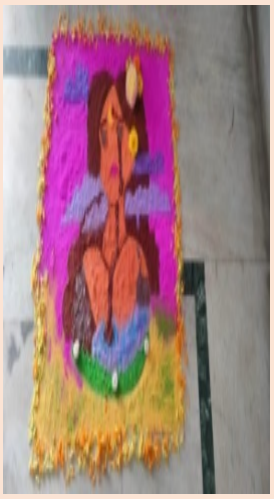

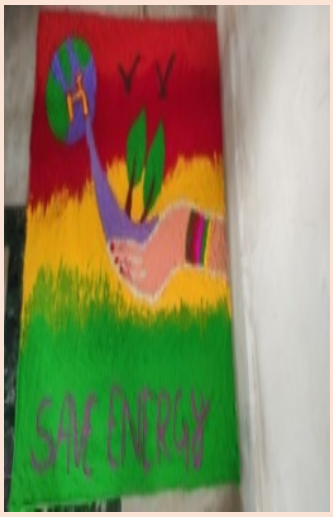
SAVE ENERGY

EARTH

SAVE ENERGY

SAVE ENERGY
SAVE EARTH

"कुज़िन कॉन्क्वेस्ट"

दिनांक 24-01-2024 को संस्थान में कुज़िन कॉन्क्वेस्ट आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभागी छात्रों ने अनेक व्यंजनों की प्रस्तुति दी।

"स्पोर्टस सप्ताह"

संस्थान में दिनांक 26 जनवरी 2024 से 2 फरवरी 2024 तक स्पोर्टस सप्ताह का आयोजन किया गया था जिसमें कई प्रकार के इनडोर और आउटडोर खेलों के प्रतियोगिता शामिल की गई थी। प्रतियोगिता में सफल होने वाले विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट सहित पदक दिया गया था।

"राइज एंड डाईन ग्राण्ड द गाला"

9 फरवरी 2024 स्वादिश्ट ब्रंच बूफे ईवेन्ट 'राइज एंड डाईन ग्राण्ड द गाला ब्रंच का आयोजन किया गया था। इस दौरान विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों एवं मॉकटेल से रेस्तरां को सजाया गया था। विद्यार्थियों के द्वारा पाक व्यंजनों की एक श्रृंख्ला तैयार किया गया था। इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों को स्वयं विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार करने और ऐसे आयोजनों में अपने खाना पकाने के कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

-धन्यवाद-